मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

जुलाई 2012 वर्ष 17, अंक 7

जयंती, 31 जुलाई पर स्मरण

कलम के सिपाही प्रेमचंद

दुख ही जीवन की कथा रही

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म बनारस से लगभग चार मील दूर लमही गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। पिता का नाम अजायबलाल और माता का नाम आनंदी देवी था। पिता डाकखाने में मुंशी थे। लगातार मुंशीगिरी करते रहने से 'मुंशी' उनकी खानदानी उपाधि बन गई। प्रेमचंद स्नेह से प्रायः वंचित रहे। अभी वे सात साल के बालक ही थे कि उनकी माता का देहांत हो गया। प्रेमचंद इस आघात को कभी भुला न सके। उन्होंने अपनी रचनाओं में इस पीड़ा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है।

प्रेमचंद का बचपन गाँव में ही बीता और वहीं पर उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फारसी पढ़ना-लिखना सीखा। उनका असल नाम धनपतराय था। प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था।

जब प्रेमचंद नवीं कक्षा में पहुँचे तो उनका विवाह हो गया। घर में पत्नी, विमाता और उनके दो बच्चे थे और आमदनी धेले की भी नहीं। वे भारी असमंजस में पड़ गए। संयोग से उन्हें पाँच रुपये मासिक वेतन का कार्य मिल गया। वे एक वकील के बेटे को ट्यूशन पढ़ाने लगे। *'पाँच रुपये वेतन ठहरा, मैंने दो रुपये में अपनी गुजर करके तीन रुपये घर पर देने का निश्चय किया। वकील साहब के अस्तबल के ऊपर एक छोटी-सी कच्ची कोठरी*

अगले पृष्ठ में जारी...

शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है, जिससे दुनिया को बदला जा सकता है।

–नेल्सन मंडेला (जन्म दिन 18 जुलाई)

शिक्षित हुए बिना महिलाओं का सच्चे अर्थ में सशक्तीकरण संभव नहीं है। वे पढ़ी-लिखी होंगी तभी समाज उनकी आवाज को उचित महत्व देगा।...शिक्षा महिलाओं के सम्मान को बढ़ाने का काम करेगा।

–महामहिम राष्ट्रपति **श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील**

हमारी जनसंख्या और साक्षरता

भारत की जनसंख्या इस समय एक अरब, 22 करोड़, 2 लाख है। स्त्री-पुरुष अनुपात हजार पुरुष पर 940 महिलाएँ हैं। वर्तमान समय में, भारत में प्रति एक मिनट में 51 बच्चों का जन्म होता है।

स्वतंत्रता के समय भारत की जनसंख्या महज 35 करोड़ थी, यानी आज की तुलना में एक-तिहाई से भी कम। भारत दुनिया का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। चीन शिखर पर है। वहाँ की जनसंख्या एक अरब 35 करोड़ है। भारत दुनिया की कुल आबादी का 17.31% जनसंख्या अपने में समाहित रखे हुए है। सन् 2030 तक हम चीन की जनसंख्या को पार कर जाएँगे, अगर जनसंख्या वृद्धि की यही दर, 1.58%, कायम रही तो।

वर्ष 2001 में 65.38% साक्षरता की तुलना में वर्ष 2011 में साक्षरता का प्रतिशत बढ़कर 74.04% हो गया। साक्षरता में विगत दस वर्षों में नौ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। पुरुष साक्षरता जहाँ 82.14% है वहीं स्त्री साक्षरता 65.46%। केरल 93.9% साक्षरता के साथ सर्वोच्च स्थान पर है। लक्षदीव व मिजोरम क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर है। इन दोनों राज्यों में भी साक्षरता 90% से अधिक है।

विगत दस वर्षों में देश में साक्षरता की स्थिति में सुधार हुआ है। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी साक्षर भारत योजना से इसमें और सुधार आने की उम्मीद है।

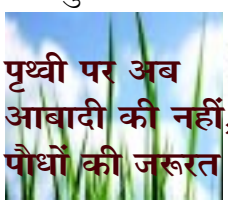

प्रेमचंद ... पिछले पृष्ठ का शेष...

थी। उसी में रहने की आज्ञा ले ली। उसमें एक टाट का टुकड़ा बिछा दिया, बाजार से एक छोटा-सा लैंप लाया और शहर में रहने लगा। घर से कुछ बर्तन भी लाया। एक वक्त खिचड़ी पकाता और बर्तन धो-माँजकर लाइब्रेरी चला जाता। गणित तो बहाना था, उपन्यास आदि पढ़ा करता।' इस प्रकार जीवनयापन करते हुए प्रेमचंद ऋण के बोझ से दबने लगे। उन्होंने अपनी एक पुस्तक किताबों की दुकान पर एक रुपये में बेची। यहाँ उनकी भेंट चुनार के मिशनरी स्कूल के हेडमास्टर से हुई। उन्होंने अट्ठारह रुपये मासिक वेतन पर प्रेमचंद को अध्यापक की नौकरी पर रख लिया। यह प्रेमचंद के लंबे शिक्षक जीवन का आरंभ था।

अध्यापकी के साथ-साथ उन्होंने कहानी, उपन्यास लिखना शुरू कर दिया। प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लिखना शुरू किया था, लेकिन बाद में हिंदी के क्षेत्र में आ गए। उनका पहला उपन्यास *असरारे मआबिद* उर्दू साप्ताहिक आवाजे-खलक (1903-05) में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। प्रेमचंद की रचनाओं में भारतीय किसान के करुण जीवन के यथार्थ को मर्मभेदी रूप से प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाओं की सामग्री उनके अपने जीवन के निजी अनुभवों और निकट परिवेश से ली गई है। *गोदान* उपन्यास और *कफन* कहानी उनकी सर्वाधिक चर्चित और कालजयी रचनाएँ हैं। इस तरह जीवन भर संघर्ष करते हुए यह सूर्य कभी न उदित होने के लिए सन् 1936 में हमेशा के लिए अस्त हो गया। परंतु अपनी रचनाओं के माध्यम से आज भी प्रेमचंद साहित्य के आकाश में एक ध्रुवतारे की भाँति टिमटिमा रहे हैं।

–किस्मत, *सोनीपत, हरियाणा*

एक जुलाई : डॉक्टर्स डे

भारत में 1 जुलाई को डॉक्टर्स डे मनाया जाता है। 1 जुलाई पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री और प्रख्यात फिजिशियन डॉ. बिधान चंद्र राय का जन्म एवं मृत्यु तिथि है। बिधान बाबू को 1961 में देश ने भारत रत्न से सम्मानित किया था। डॉक्टर्स डे मनाकर हम डॉक्टर एवं फिजिशियन की मानवता एवं समाज के प्रति उनकी सेवाओं का स्मरण एवं सम्मान करते हैं और याद भी करते हैं कि उनका हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है। वैसे, पहली बार डॉक्टर्स डे 30 मार्च, 1933 को जॉर्जिया में मनाया गया था। यूडोरा अलमंड नामक एक डॉक्टर की पत्नी ने फिजिशियनों को सम्मान देने के विचार से इस अवधारणा को सामने रखा था। दरअसल, इस दिवस को 1842 में पहली बार एक मरीज पर इथर एनेस्थिसिया का प्रयोग कर उसका इलाज किया गया था।

प्रेरणा

जज्बे से फुलबासन चढ़ी आकाश

राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ की फुलबासन यादव आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उन्हें राष्ट्रपति ने पद्मश्री अवार्ड दिया है। राज्य और जिला स्तर के दसेक सम्मान-पुरस्कार उन्हें पहले ही मिल चुके हैं। राजनांदगाँव में आज से 12 साल पहले वह घरों में बर्तन माँजकर अपना पेट पालती थीं। बाल विवाह होने की वजह से बच्चों के लालन-पालन का जिम्मा भी किशोरावस्था में ही उठाना पड़ा। स्वयं तो अनपढ़ थीं, पति भी अनपढ़-गँवार मिला। तंगहाली का यह आलम था कि कई शाम भूखे रहने पर मजबूर होती थीं। पति गाय, बकरियाँ चराता, अब भी चराता है। भीषण तंगहाली ने फुलबासन को शक्ति दी और फिर तो जिंदगी ने ऐसे रंग दिखाए कि महज 12 साल के सफर में वह फर्श से अर्श पर आ गईं। अब उनके घर पर नेता, मंत्री सब आते हैं।

दरअसल, फाकाकशी ने फुलबासन को कुछ करने के लिए प्रेरित किया और वे गाँव की अपनी ही तरह की कुछ महिलाओं को स्वयं से जोड़कर, सहयोग लेकर आगे बढ़ने के हौसले से काम करने लगीं। पैदल चलना मुश्किल लगा तो साइकिल ले ली और दूर-दराज के दुरूह क्षेत्रों तक जाने लगीं। लोगों को जोड़ा। सिलाई, कढ़ाई, बुनाई से लेकर और अनेक कार्यविधाओं में महिलाओं को पारंगत किया, उन्हें रोजगार के अवसर दिखाए। बिना किसी सरकारी सहायता के लोगों से मात्र 10 रुपये की सहयोग राशि के बल पर एक हजार महिलाओं को जोड़ लिया। यह संख्या बढ़ी, बढ़ती गई और बढ़कर दो लाख हो गई। आज उनके द्वारा सृजित स्वयं सहायता समूह के पास 20 करोड़ रुपये की जमा पूँजी है। उन्हें पद्मश्री स्वयं सहायता समूह के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ही प्रदान किया गया।

फुलबासन के बारे में खास बात यह है कि वह सम्मान-पुरस्कार में प्राप्त तमाम राशियों को अपनी संस्था 'माँ बमलेश्वरी जनहितकारी समिति' को दान कर देती हैं। फुलबासन की सचिव और सहायक एम.ए. पास है।

ज्ञान बाँटने से
ज्ञान की जड़ें
और फैलती हैं
सच्चा ज्ञानी वो है
जो अपना ज्ञान
दूसरों को देता है।

किशन लाल शर्मा
आगरा, उ.प्र.

हमको लिखना-पढ़ना है
हर दिन आगे बढ़ना है
नित नई सीढ़ियाँ चढ़ना है
हर दिन आगे बढ़ना है
इतिहास नया अब गढ़ना है
हर दिन आगे बढ़ना है।

रामचरण यादव 'याददाश्त'
बैतूल, म.प्र.

वन महोत्सव सप्ताह

जुलाई महीने में समूचे भारत में वन महोत्सव सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर पूरे देश में पेड़ लगाए जाते हैं। वैसे, 5 जून को वन महोत्सव दिवस भी मनाया जाता है। वन महोत्सव की यह अवधारणा 1950 में तत्कालीन कृषि एवं खाद्य मंत्री श्री कन्हैयालाल एम. मुंशी की देन है। उनका कहना था, "पेड़ माने पानी, पानी माने रोटी और रोटी जीवन है।" दरअसल, लोगों में पेड़ के प्रति जागरूकता और अपनत्व पैदा करना उनका उद्देश्य था।

दरअसल, पेड़ लगाना ग्लोबल वार्मिंग से बचने का एक अच्छा और निरापद तरीका है। यह प्रदूषण घटाता है। अतः प्रत्येक भारतवासी को वन महोत्सव का सक्रिय हिस्सेदार बनना चाहिए।

तैरते पुस्तक मेला का एक साल पूरा

न कभी देखा, न कभी सुना पर यह सच है कि एक तैरता हुआ पुस्तक मेला सारी दुनिया का चक्कर लगा रहा है। गत वर्ष 30 जुलाई को यही तैरता पुस्तक मेला वाला जहाज विशाखापतनम के समुद्र तट पर आया था। यह पुस्तक मेला 11 अगस्त तक चला था। वैसे, इसे 'तैरता हुआ पुस्तकालय' भी कहा जाता है, जो अपने आप में एक अनोखी अवधारणा है। **एम वी लोगोस होप** नामक इस पुस्तकालय को 'गूगल बुक्स फॉर ऑल (जीबीए)' संचालित करता है, जो जर्मनी स्थित एक अंतरराष्ट्रीय चैरिटी संस्था है। चार जीबीए शिप में यह सबसे बड़ा है।

विदित हो कि पिछले 40 सालों में जीबीए शिप का यह तीसरा भारत दौरा था। इससे पहले, 1972 एवं 2006 में भी यह भारतीय तट पर आ चुका है। इस जहाज में दुनिया भर के 40 देशों के लगभग 400 स्वयंसेवक हरदम मुस्तैद रहते हैं।

इस जहाज पर बाल पुस्तकों समेत तकरीबन हर विषय की पुस्तकें रखी होती हैं। इस पुस्तकालय सह पुस्तक मेला का समन्वय-संचालन-प्रदर्शन कैसे होता होगा इसकी कल्पना मात्र ही किसी पुस्तकप्रेमी को रोमांचित कर देगी।

प्रेमचंद जयंती

कहानी का असर

सुरेंद्र श्रीवास्तव

घटना उस समय की है, जब उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानियों की सारे भारत में धूम थी। सर्वत्र उनकी कहानियों की चर्चा होती थी। दरअसल उनकी कहानियों का विषय, शिल्प व भाषा प्रभावकारी तथा विचारोत्तेजक होती थी।

उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन प्रेमचंद जी अपने कार्यालय में बैठे हुए थे और कुछ लिखने में तल्लीन थे। तभी एक आदमी उनसे मिलने के लिए आया। आदमी ने प्रेमचंद जी को सृजन में व्यस्त देखा, तो बिना कुछ बोले मेज के नीचे घुस गया और उनके पैर पकड़ लिये। साथ ही पैरों पर सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगा।

प्रेमचंद जी इस अप्रत्याशित घटना से चौंक उठे। उन्होंने उस व्यक्ति को उठाकर खड़ा किया और उसे ढाढ़स बँधाने लगे। क्या माजरा है, यह उनकी समझ में नहीं आया। जिज्ञासावश उन्होंने उससे रोने का कारण पूछा।

सिसकते हुए ही उस व्यक्ति ने प्रेमचंद जी को बताया कि वह एक अच्छा व्यापारी था, किंतु उसके व्यापार में घाटा होने लगा। उसने कई बार व्यापार पुनः शुरू किया, लेकिन लगातार सात बार व्यापार में असफल होकर वह गंभीर आर्थिक कर्ज में दब गया। ऐसे में उसने आत्महत्या का निश्चय कर लिया। इसी बीच अचानक उसने एक पत्रिका में प्रेमचंद जी रचित एक कहानी पढ़ी।

उस कहानी को पढ़कर उस व्यक्ति के विचार ही बदल गए। उसमें नए उत्साह का संचार हुआ। उसने आत्महत्या का विचार त्याग दिया और घर आकर आत्महत्या के लिखे कागज को फाड़ डाला। फिर वह नए उत्साह से व्यापार में जुट गया। इस बार नई प्रेरणा के वशीभूत उसने खूब मेहनत की और उसे व्यापार में सफलता मिली। अब वह पुनः लाखों का व्यक्ति बन गया है। आज वह प्रेमचंद जी के पास उनकी प्रेरणादायक कहानी व उससे मिले नवजीवन के लिए उन्हें धन्यवाद देने आया था।

गोमतीनगर, लखनऊ, उ.प्र.

लगती कितनी भली बेटियाँ

सतीश उपाध्याय

सुंदर, कोमल, कली बेटियाँ
लगती कितनी, भली बेटियाँ
मत बाँधो पैरों में बंधन
अंतरिक्ष को चली बेटियाँ

कितना मीठा मन रखती हैं
ज्यों मिश्री की डली बेटियाँ
अनुपम एक उदाहरण हैं
संघर्षों में पली बेटियाँ

बाधाओं से खूब जूझती
दिखती हैं, हर गली बेटियाँ
चाहे जितनी हो बाधाएँ
राहों से न टली बेटियाँ

अँधियारी राहों में हरदम
दीपक बनकर, जली बेटियाँ
पेड़ सरीखे, मन रखकर
डाली-डाली, फली बेटियाँ।

मनेंद्रगढ़, कोरिया, छत्तीसगढ़

पढ़ने का संकल्प

रचना सिद्धा

क्या करना है अब पढ़-लिखकर
सोचा करती थी गीता
बचपन और जवानी अब तक
बातों-बातों में बीता

बहुत कहा करती थी उससे
उसकी सखियाँ बचपन में
थोड़ा-थोड़ा लिख ले पढ़ ले
काम आएगा जीवन में

पर घर की जिम्मेदारी में
उलझी रही थी तब गीता
अब उसको लगता है अपना
बचपन व्यर्थ यूँ ही बीता

तभी कहीं से आई उड़ती
एक खबर थी गाँव में
साक्षर भारत कार्यक्रम आया
पूरे हिंदुस्तान में

सुनी खबर जब गीता ने तब
मन में अपने ठान लिया
अब पढ़ने मैं भी जाऊँगी
ऐसा दृढ़ संकल्प किया।

जयपुर, राजस्थान

मॉनसून के रंग, कविताओं के संग

बादल काले पानी वाले

सुरेश कुशवाहा 'तन्मय'

बादल काले-काले हैं
ये तो पानी वाले हैं

ये पानी बरसाएँगे
सबका मन हरसाएँगे

कुएँ बावड़ी, नदियाँ-नहरें
खिल जाएँगे सबके चेहरे

छाएगी जग में हरियाली
फसल पकेगी मने दिवाली

इनके खेल निराले हैं
आगे बहुत उजाले हैं

बादल काले-काले हैं
ये तो पानी वाले हैं।

भोपाल, म.प्र.

मुस्कान है बेटी
परिवार की
खुशी जहाँ की।

सुगनचंद जैन नलिन
गुना, म.प्र.

पढ़ेगी अब बेटी

किताबों से पढ़कर, सिलेटों पे लिखकर
पढ़ेगी अब बेटी, शब्द हर समझकर।

मिटेगा अँधेरा अज्ञानता का सारा
सबने है मिलकर यही अब पुकारा
रख देंगे एक दिन दुनिया बदलकर
पढ़ेगी अब बेटी, शब्द हर समझकर।

आओ पढ़ाएँ, सीखें, सिखाएँ
जीने का सबको सलीका बताएँ
बढ़ाएँ कदम अब, चलें साथ मिलकर
पढ़ेगी अब बेटी, शब्द हर समझकर।

जनसंख्या का निवारण

भोमाराम बैरवा

जनसंख्या का निवारण कैसे करेंगे
छोटा परिवार हो हमारा तो हम राज करेंगे
'हम दो हमारे दो' का नारा बुलंद करेंगे
दो बच्चों को हम अच्छी शिक्षा दिलाएँगे
खूब लिखाएँगे-पढ़ाएँगे, आत्मनिर्भर बनाएँगे
मानवता का उनको अच्छा पाठ पढ़ाएँगे
जनसंख्या वृद्धि से हम छुटकारा पाएँगे
छोटे परिवार में खुशियाँ हम ला देंगे
छोटे परिवार में सब तरह से जीवन पाएँगे
माता-पिता का पूरा-पूरा आशीर्वाद पाएँगे
हम दूसरों को भी अपार खुशियाँ दे पाएँगे
चारों तरफ शांति का संदेश पहुँचा पाएँगे।

दौसा, राजस्थान

अक्षर देता ज्ञान हमें
और मिले पहचान हमें
जीवन में उजियारा होता
मिलता है सम्मान हमें।

गीता मृत्युंजय शर्मा, भिलाई

जो होते हैं साक्षर-शिक्षित
वे प्रगति पथ पर बढ़ते हैं
निज ज्ञान-वृद्धि के ही बल पर
उन्नति के शिखर पर चढ़ते हैं।

विनोद चंद्र पांडेय 'विनोद', लखनऊ

निरक्षरता अभिशाप है
इससे लड़ना है जरूरी
कूपमंडूक नहीं बनना है
इसलिए पढ़ना है जरूरी।

कमलेश व्यास 'कमल', उज्जैन

अनपढ़ का भी जग में
क्या कोई जीवन है
बाकी धन धूलि-सम
विद्या ही उत्तम धन है।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद', कांगड़ा

निरक्षर को
अक्षर ज्ञान कराएँ
आएँ मेरे साथ!

सुरेश आनंद, रतलाम, म.प्र.

हाँ, बदलेगी
किताबों से दुनिया
करो प्रयास।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

पढ़ो, पढ़ाओ
कामयाब बनाओ
निरक्षर को।

सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

जहाँ पुस्तकें हैं वहाँ से लोभ, मोह और भ्रम को भगाना कठिन नहीं।

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **जून 2012, सा. सं. :** आपके संपादन में निकल रहे **साक्षरता संवाद** को कुछ वर्षों से नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ। आज के समय में जब छापे अक्षरों की बाढ़-सी आई हुई है लेकिन गुणवत्तायुक्त एवं उपयोगी पठन सामग्री की कमी निरंतर महसूस की जाती है। ऐसे समय में **साक्षरता संवाद** एक सफल एवं सशक्त संवाद माध्यम के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। **साक्षरता संवाद** मासिक होने के बावजूद समय की नब्ज को टटोलते हुए और समझते हुए चलता है। पूरे महीने की विभिन्न विशेष तिथियों के महत्व एवं उन तिथियों से जुड़े व्यक्तियों, संस्थाओं एवं घटनाओं से पाठक को परिचित कराता **साक्षरता संवाद** एक शिक्षक की भूमिका निभाता है। और शिक्षक भी ऐसा जो कि सभी उम्र के पाठकों के लिए एक समान उपयोगी है। इस पाठकोपयोगी एवं निरंतर ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करने वाले मासिक पत्र के सफल संपादन हेतु साधुवाद!

शैलेश शुक्ल, हिंदी अधिकारी, सिक्किम वि.वि., गंगटोक

☐ अंक अच्छा लगा। दादाभाई नौरोजी पर अच्छी सामग्री दी गई। कबीर को याद करना सामयिक है। बिरसा मुंडा की कहानी सबके लिए पठनीय है। कविताएँ अच्छी लगीं, विशेषकर शरद खरे एवं मीना गुप्ता की कविताएँ। पर्यावरण से संबद्ध सामग्री अच्छी है, अंतिम पृष्ठ मनोहारी एवं मनभावन लगा। पर्यावरण दिवस को ध्यान में रखकर मुद्रित हरीतिमापूर्ण चित्र नयनाभिराम एवं मन को मुदित करने वाले हैं। **ओम प्रकाश मंजुल,** बरेली, उ.प्र.

☐ **मई 2012 :** महापुरुषों के जन्मदिन एवं पुण्य तिथि पर सामग्री पठनीय है। हिंदी के पहले साप्ताहिक 'उदंत मार्तण्ड' के मुखपृष्ठ को देखकर अच्छा लगा। इंद्रधनुषी कविताएँ एवं नवसाक्षरों के लिए प्रस्तुत सामग्री उपयोगी एवं प्रेरणाप्रद हैं।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

☐ **सा. सं.** मई अंक एक मित्र के यहाँ देखने-पढ़ने का अवसर मिला। संक्षिप्त ही सही, संपूर्ण सामग्री सारगर्भित, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी तथा जनसामान्य के लिए उपयोगी लगी। विशेष बात यह कि सभी रचनाएँ सहजता एवं सरलता लिये हुए है। बधाई स्वीकारें।

सुरेश कुशवाहा 'तन्मय', पिपलानी, भोपाल, म.प्र.

☐ **सा. सं.** पढ़ा, काफी रोचक लगा। भारत देश को निरक्षरता से मुक्त करने का आपका प्रयास सराहनीय है। कृपया पत्रिका नियमित भिजवाएँ। **कपिलदेव ठाकुर 'कृपाला',** भागलपुर, बिहार

☐ **साक्षरता संवाद** एक प्यारी-सी धरोहर लगने लगी है।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ महापुरुषों के जन्मदिन एवं पुण्य तिथियों पर उन्हें स्मरण करके आपने महत्वपूर्ण काम किया है। कविताएँ प्रेरक एवं आनंदित करने वाली थीं। **सिद्धार्थ,** गुड़गाँव, हरियाणा

☐ **सा. सं.** में दिन-प्रतिदिन नूतन निखार और इसके सारगर्भित संकलन के लिए आपका अभिनंदन। महापुरुषों की कथा प्रेरक लगती है। **पं. मृत्युंजय शर्मा,** भिलाई, म.प्र.

☐ **अप्रैल 2012 :** यह लघु पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल है। वैसे तो यह विशिष्ट पाठकों के लिए है पर जो भी इसे पढ़ता है इस ज्ञान मंजूषा से लाभान्वित होता है।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

☐ सामग्री पठनीय और ज्ञानवर्धक है। साक्षरता संबंधी कविताएँ भी प्रभावपूर्ण हैं। **डॉ. गोपाल बाबू शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

भूल सुधार : पृ. 8 पर प्रकाशित बोध कथा 'अपराध बोध' के लेखक कमलचंद वर्मा (डॉ. आंबेडकर नगर, महू, म.प्र.) हैं। नाम अप्रकाशित रह जाने का खेद है। **—संपा.**

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। *—संपा.*

चाह

कमला प्रसाद चौरसिया, *भोपाल, म.प्र.*

पन्ने पलट रही है बुढ़िया
पुस्तक बाँच रही है गुड़िया।
पढ़ा-लिखा तो नेक नहीं पर
चश्मा चढ़ा रही है बुढ़िया।
झाँक-झाँककर बुढ़िया का मुख
हँस-हँस पूछ रही है गुड़िया।
क्या समझी, क्या समझ न पाई
मुझको भी समझा दे बुढ़िया।
बुढ़िया ने बोला इक अक्षर
पुस्तक है अक्षर की पुड़िया।
मैंने सीख लिया है पढ़ना
विस्मित मत हो प्यारी गुड़िया!
जैसे तू हो गई है सयानी
बाँच-बाँच चूरन की पुड़िया।

वीरो

अंजना अनिल, *अलवर, राजस्थान*

आज वीरो को गर्व है
वह निरक्षर नहीं
साक्षर है!
गाँव का पोखर
उसे देख मुस्कराता है
दीनू काका भी अपना
मस्तक ऊँचा उठाता है!
वीरो जान गई है
साक्षरता का अर्थ
अज्ञान के अँधेरों से
वो बाहर आ गई है
देश को हर ऐसी वीरो पर
गर्व है!

साक्षरता का नया सवेरा

रूपनारायण काबरा, *जयपुर, राजस्थान*

जहाँ निरक्षरता के तम ने
डाल रखा है अपना डेरा
हमें वहाँ लाना है मिलकर
साक्षरता का नया सवेरा।

जिसने पढ़ना-लिखना सीखा
पाया उसने नया सहारा
उसे ज्ञान के धन-दौलत का
मानो मिला खजाना न्यारा।

अनपढ़ को यदि आप पढ़ाओ
पुण्य मिले, यश गान अपारा
बच्चे बूढ़े सब पढ़ जाए
जागे हिंदुस्तान हमारा।

एक एक कर लगें पढ़ाने
तो फिर मंजिल दूर नहीं
अँधियारा तो भग जाएगा
खुशहाली फिर दूर नहीं।

सभी समस्या मिट जाएगी
सब शिक्षित हों तभी सवेरा
साक्षरता का दीप जले तो
नहीं टिकेगा कहीं अँधेरा।

आज समस्याओं ने घेरा
ये सब तो हल हो जाएँगी
साक्षरता का दीप जले तो
नहीं टिकेगा कहीं अँधेरा।

हम पढ़ें, औरों को पढ़ाएँ

नास्तिक, *महू, इंदौर, म.प्र.*

अक्षरों को मीत बनाएँ
साथ-साथ बैठें–
हम पढ़ें, औरों को पढ़ाएँ।

हाथ मिला, हम संकल्प लें
आगे बढ़-बढ़कर
हमारे आस-पास न रहे
कोई भी जन निरक्षर
वाक्य रचना, व्याकरण को
सरल बना-बनाकर–
हम सीखें, औरों को सिखाएँ।

पढ़ने-लिखने से बढ़ता है
ज्ञान-विज्ञान का भंडार
कोसों दूर चला जाता है
अज्ञानता का अँधकार
सुनहरा हो जाता है
शब्दों का संसार–
हम जानें, औरों को बताएँ।

कठिन नहीं, सरल है
करना शिक्षा का दान
इस काम से बढ़ता है
जग में मान-सम्मान
सिर से उतरता है समाज
का सारा ऋण–
हम समझें, औरों को समझाएँ।

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/07/2012

मिसाल

ठहरो, कि लड़कियाँ आती हैं फिजाँ बदलने

दिल्ली के एक बुजुर्ग मुहम्मद नफीस अब्बासी का मानना है कि लड़की पढ़ेगी तो घर, समाज का माहौल बदलेगा। वे कहते हैं कि मुसलमानों को अगर अपनी आर्थिक और सामाजिक दुश्वारियों से बाहर आना है तो अपनी लड़कियों को शिक्षा और जागरूकता के रास्ते पर डालना होगा। उनका मानना है कि गरीब घरों और कम पढ़े मुसलमानों की लड़कियों में जिंदगी से आँख मिलाने का हौसला केवल शिक्षा और रोजगार से आएगा। इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर से जुड़े अब्बासी ने अमरोहा, उत्तर प्रदेश में एक गर्ल्स डिग्री कॉलेज खोला है। वे उस कॉलेज में पढ़ चुकीं लड़कियों से नई पीढ़ी की लड़कियों को तालीम देने को कहते हैं। अगर कॉलेज में कोई नियुक्ति निकलती है तो लड़कियों को योग्यता के हिसाब से वहाँ काम दिलवाने की कोशिश करते हैं। पासआउट लड़कियाँ छोटी लड़कियों को शिक्षा और नौकरी के क्षेत्र में जाने के लिए समुचित सलाह देती हैं। जनाब अब्बासी की यह कोशिश रंग भी ला रही है। लेकिन मुहम्मद नफीस जैसे जज्बे वाले और लोगों की जरूरत है, तभी समाज में स्त्री शिक्षा, खासकर मुस्लिम स्त्रियों की दशा-दिशा में सुधार होगा।

उत्तम विचार

किताबें कभी-कभी दिशा भी देती हैं। किताबों का यह पक्ष कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। शायद इसीलिए किताबें पढ़ना मुझे अच्छा लगता है। हर तरह की किताबें पढ़ लेता हूँ। और अकसर दो-तीन किताबें साथ पढ़ता हूँ। जब कोई किताब खत्म होने को होती है तो मैं उदास हो जाता हूँ—लगता है जैसे कोई साथी बिछड़ने वाला है। **विश्वनाथ सचदेव,** संपादक, नवनीत

लुप्त हो रही
हाथ की लिखावट
स्नेह की लिपि
इसे बचाएँ!
नलिनीकांत, अंडाल, प. बंगाल

सत्य वचन

फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है, लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है। **—चाणक्य**

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070